IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं उद्यानिकी फसलें मध्य प्रदेश के संदर्भ में एक अध्ययन

विक्रम यादव

शोधार्थी, वाणिज्य विभागसनराइज विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)

डॉ. रामबीर

शोध मार्गदर्शक, सहायक प्राध्यापकवाणिज्य विभागसनराइज विश्वविद्यालय अलवर (राजस्थान)

प्रस्तावना –मध्य प्रदेश कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला राज्य है। राज्य की कुल कार्यशील जनसंख्या का 69 प्रतिशत भाग अपनी आजीविका के लिये कृषि पर निर्भर है तथा ग्रामीण कार्यशील जनसंख्या का 85.6 प्रतिशत भाग आजीविका के लिये कृषि पर निर्भर है। राज्य की कुल जनसंख्या 7,25,97,565 है जिसमें 5,25,37,899;72.37 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है। प्रदेश देश का ऐसा राज्य है जहाँ लगभग सभी प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता है। खाद्यान्न फसलें;गेहूँ, चावल, मक्का, ज्वार, बाजराद्ध दलहन फसलें;चना, अरहर, मूंग, उड़द, मसूरद्ध, तिलहन फसलें;सोयाबीन, सरसों, तिल, मूंगफलीद्ध, वाणिज्यिक फसलें;गल्ला, कपासद्ध, मसाला फसलें;मिर्च, धनियां, हल्दी, लहसुन, अदरकद्ध, सब्जियां;आलू, शकरकन्द, प्याज, मटर, टमाटर, चुकन्दर इत्यादिद्ध, फल फसलें;केला, आम, सन्तरा, पपीताद्ध तथा फूल वाली फसलें;गैंदा, गुलाबद्ध प्रदेश की प्रमुख कृषि उपजे हैं। सोयाबीन, चना एवं दालो के उत्पादन में मध्य प्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है। तिलहन के उत्पादन (20.4%) में देश में दूसरे स्थान पर है। सरसों (10.46%) एवं ज्वार (8.26%) के उत्पादन की दृष्टि से देश में तीसरा राज्य है। गेहूँ उत्पादन में भी तीसरे स्थान पर है। प्रदेश कृषि उत्पादन की दृष्टि से देश का अग्रणी राज्य बन गया है। वर्ष 2020–21 तथा 2012–2013 में राज्य की कृषि विकास दर क्रमशः 18.89% तथा (24.8%) रही, जो देश में सबसे अधिक विकास दर है। प्रदेश के कृषि उत्पादन तथा कृषि विकास दर में उद्यानिकी क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है।

शोध कार्य के उद्देश्य –शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य मध्य प्रदेश में उद्यानिकी फसलों के विकास का अध्ययन करना है, जिसके अन्तर्गत चयनित उद्यानिकी फसलों का क्षेत्रफल विस्तार तथा उत्पादन की वृद्धि दर, विकास में राजकीय सहयोग, विकास की बाधायें तथा बाधायें दूर करने के उपायों का अध्ययन करना है। उपर्युक्त अध्ययन एवं विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर मध्य प्रदेश में उद्यानिकी फसलों के तीव्र विकास हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि–शोध पत्र भारत के राज्य मध्य प्रदेश में कृषि क्षेत्र के उद्यानिकी फसलों के विकास के विश्लेषण से सम्बन्धित है। शोध कार्य में मध्य प्रदेश में वर्ष 2019–20 से 2020–21 तक विगत पाँच वर्षों में उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल विस्तार तथा उद्यानिकी फसलों के उत्पादन का विश्लेषण किया गया है। शोधकार्य में प्रकरण अध्ययन हेतु उद्यानिकी फसलों में तीन प्रमुख फसलों – मसाले, सब्जियां तथा फलों का चयन किया गया है। पुनः इन तीन चयनित फसलों के अन्तर्गत प्रकरण अध्ययन हेतु – मसाला फसलों में प्रदेश में मुख्य रूप से पैदा की जाने वाली फसलों – मिर्च, धनियां, अदरक तथा लहसुन का चयन किया गया है। सब्जी फसलों के अन्तर्गत – आलू, शकरकन्द, मटर, टमाटर, प्याज एवं फूलगोभी का प्रकरण अध्ययन हेतु चयन किया

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

गया है। फल फसलों के अन्तर्गत प्रदेश में प्रमुख रूप से पैदा होने वाले चार फलों – केला, आम, मौसम्मी सन्तरा एवं पपीता का प्रकरण अध्ययन हेतु चयन किया गया है। शोध कार्य में द्वितीयक समंकों का उपयोग किया गया हैं। उक्त समंकों से विश्लेषण हेतु विविध उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल सूचकांक, क्षेत्रफल वृद्धि दरें, उत्पादन वृद्धि दरें तथा क्षेत्रफल एवं उत्पादन से सम्बन्धित मिश्रित वृद्धि दरों की गणना की गई है।[1] इन परिकलित वृद्धि दरों के माध्यम से शोध क्षेत्र में शोध अवधि के अन्तर्गत समग्र उद्यानिकी फसलों के साथ–साथ उद्यानिकी फसलों के तीनों व्यक्तिगत अवययों तथा उनके अन्तर्गत चयनित फसलों के विकास की प्रवृति ज्ञात की गई है।

उद्यानिकी फसलों का विकास – उद्यानिकी फसलों का विकास कृषि विविधीकरण का परिणाम है। परम्परागत खाद्यान्न फसलों की पूर्व आवश्यकतायें पूर्ण न कर सकने वाले छोटे कृषकों ने बागवानी फसलों की ओर अपना रूख किया है। बागवानी फसलें सीमान्त और छोटे कृषकों के लिये परम्परागत खाद्यान्न फसलों की अपेक्षा अधिक उपयुक्त है। क्योंकि बागवानी फसलों के लिये न तो बड़े कृषि क्षेत्रफल की आवश्यकता होती है और नही महँगी कृषि आदाओं की आवश्यकता होती है। बागवानी फसलों को छोटे कृषि क्षेत्र पर बिना अधिक पूँजी निवेश के सरलतापूर्वक उगाया जा सकता है। बागवानी फसलें श्रम गहन तकनीक आधारित फसलें हैं,[2] जिनमें जलवायु परिवर्तन के कम दुष्प्रभाव होते हैं। अतएव मध्य प्रदेश के लिये बागवानी फसलें अधिक उपयुक्त है क्योंकि यहाँ औसत कृषि जोत का आकार 1.78 हैक्टेयर है। राज्य की कुल कृषि जोतो की 7.46 प्रतिशत सीमान्त और लघु जोते हैं। जो बागवानी फसलों के लिये उपयुक्त है। राज्य में सीमान्त कृषि जोतो और लघु कृषि जोतों का औसत आकार क्रमशः 0.49 है. तथा 1.42 हैक्टेयर है।

चयनित उद्यानिकी फसलों के फसलाधीन क्षेत्रफल में निरन्तर एवं तीव्र वृद्धि परिलक्षित हुई है। शोध अवधि के प्रारम्भिक वर्ष 2019–20 में उद्यानिकी फसलों का क्षेत्राच्छादन 676110 हैक्टेयर था, जो शोध अवधि के अन्तिम वर्ष में बढ़ कर 1,38,6427 हैक्टेयर हो गया। यह शोध अवधि में शोध क्षेत्र में उद्यानिकी फसलों के फसलाधीन क्षेत्रफल में दो गुनी (205.10%) वद्धि है, जो प्रदेश में लागू किये गये 'राष्ट्रीय उद्यानिकी मिशन' के लक्ष्य से भी आगे बढ़ने की दिशा का सूचक है।[3]

चयनित बागवानी फसलों के व्यक्तिगत अवयवों – मसाला फसलों, सब्जियों तथा फल फसलों के क्षेत्रफल में भी तीव्र वृद्धि की प्रवृति परिलक्षित हुई है। प्रारंभिक वर्ष 2019–20 में मसाले वाली फसलों का फसलाधीन क्षेत्रफल 315350 हैक्टेयर था, जो शोध अवधि के अग्रिम वर्ष 2020–21 में बढ़कर 554204 हैक्टेयर हो गया। यह शोध अवधि में शोध क्षेत्र में मसाला फसलाधीन क्षेत्रफल में 75.74 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि है। शोध अवधि में शोध क्षेत्र में फसलाधीन क्षेत्रफल में विस्तार की दृष्टि से सब्जियों की स्थिति सर्वाधिक श्रेष्ठ रहीं। शोध अवधि के प्रारंभिक वर्ष 2019–20 में शोध क्षेत्र में सब्जियों का फसलाधीन क्षेत्रफल 248380 हैक्टेयर था, जो शोध अवधि के अग्रिम वर्ष 2020–21 में बढ़कर 62,1691 हैक्टेयर हो गया। इसी प्रकार में सब्जियों के फसलाधीन क्षेत्रफल में 150.30 प्रतिशत की वृद्धि का सूचक है। यही वृद्धि की प्रवृति फलों के सम्बन्ध में भी रही। शोध क्षेत्र में शोध अवधि के प्रारम्भिक वर्ष 2019–20 में फलों का फसलाधीन क्षेत्रफल 112380 हैक्टेयर था, जो शोध अवधि के अंतिम वर्ष 2020–21 में बढ़कर 210532 हैक्टेयर हो गया। यह शोध क्षेत्र में शोध अवधि में फलों के फसलाधीन क्षेत्रफल में 87034 प्रतिशत वृद्धि का घोतक है। इस प्रकार, शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनित उद्यानिकी फसलों के फसलाधीन क्षेत्रफल का विश्लेषण करने के उपरान्त सुगमतापूर्वक प्रतिपादित किया जा सकता है कि विचाराधीन शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनित उद्यानिकी फसलों के क्षेत्राच्छादन में तीव्र वृद्धि हुई है।[4]

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

सूचकांकों में वृद्धि के सूचक – विचाराधीन शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनित उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल सूचकांकों में निरन्तर वृद्धि की प्रवृति परिलक्षित हुई हैं।[5]

1. **समग्र उद्यानिकी फसल में दो गुनी वृद्धि –**शोध क्षेत्र में शोध अवधि में चयनित उद्यानिकी फसलों का समस्त फसलाधीन क्षेत्रफल बढ़ा है। शोध अवधि के प्रारम्भिक वर्ष की तुलना में यह शोध अवधि के अन्तिम वर्ष में बढ़कर 205.10 हो गया। समग्र उद्यानिकी फसल क्षेत्राच्छादन सूचकांक में सतत वृद्धि की प्रवृति पाई गई। वर्ष 2010–11 में यह सूचकांक 115.65 हो गया। वर्ष 2020–21 में यह सूचकांक 168.66 हो गया। वर्ष 2012–13 में यह 199.05 हो गया तथा अन्तिम वर्ष में यह दो गुना बढ़कर 205. 10 हो गया। यह निरन्तर वृद्धि की प्रवृति का सूचक है।[6]

उद्यानिकी फसलों का क्षेत्रीय विवरण(हैक्टेयर में)

फसल वर्ष	मसाले			सब्जियाँ			फल			उद्यानिकी फसलें		
	क्षेत्रफल	क्षेत्रफल सूचकांक	प्रवृत्ति	क्षेत्रफल	क्षेत्रफल सूचकांक	प्रवृत्ति	क्षेत्रफल	क्षेत्रफल सूचकांक	प्रवृत्ति	क्षेत्रफल	क्षेत्रफल सूचकांक	प्रवृत्ति
2019–20	315350	100	–	248380	100	–	112380	100	–	676110	100	–
2010–11	365850	116.01	16.01	283680	114.21	14.21	132380	117.80	17.80	781910	115.65	15.65
2020–21	468704	148.63	48.63	504409	203.08	103.08	163864	145.81	45.81	1136977	168.16	68.16
2012–13	537671	170.50	70.50	603674	243.05	143.05	204440	181.92	81.92	1345805	199.05	99.05
2020–21	554204	175.74	75.74	621691	250.30	150.30	210532	187.34	87.34	1386427	205.10	105.10

2. मसाला क्षेत्राच्छादन सूचकांक : वृद्धि की प्रवृति – शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनित मसाला फसलों का फसलाधीन क्षेत्रफल सूचकांक निरन्तर बढ़ा है। शोध अवधि के प्रारंभिक वर्ष की तुलना में इसमें 75.74 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 2010–11 में मसाला फसलों का फसलाधीन क्षेत्रफल सूचकांक 11.01 रहा। वर्ष 2020–21 में यह सूचकांक 148.63 हो गया। वर्ष 2012–13 में यह सूचकांक 170.50 हो गया तथा अन्तिम वर्ष में यह सूचकांक बढ़कर 175.74 हो गया। यह प्रवृति मसाला फसलों के क्षेत्राच्छादन क्षेत्र में अच्छी वृद्धि का सूचक है।

3. फल क्षेत्राच्छादन सूचकांक : अधिक वृद्धि – शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनित फलों के फसलाधीन क्षेत्रफल सूचकांक निम्न में निरन्तरवद्धि की प्रवृति रही और यह वृद्धि मसाला फसलों के क्षेत्राच्छादन सूचकांक की अपेक्षा अधिक रही। वर्ष 2010–11 में फलों का क्षेत्राच्छादन सूचकांक 117.80 रहा। वर्ष 2020–21 में यह सूचकांक 145.81 रहा। वर्ष 2012 13 में यह सूचकांक बढ़कर 181.92 हो गया और शोध अवधि के अन्तिम वर्ष 2020–21 में यह सूचकांक बढ़कर 187.34 हो गया। यह फलों के फसलाधीन क्षेत्रफल में निरन्तर अच्छी वृद्धि का सूचक है।[7]

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

उत्पादन (लाख मीट्रिक टन में)

फसल वर्ष	मसाले			सब्जियाँ			फल			उद्यानिकी फसलें		
	उत्पादन	उत्पादन सूचकांक	प्रवृत्ति	उत्पादन	उत्पादन सूचकांक	प्रवृत्ति	उत्पादन	उत्पादन सूचकांक	प्रवृत्ति	उत्पादन	उत्पादन सूचकांक	प्रवृत्ति
2016–17	4.19	–	–	32.42	–	–	28.64	–	–	65.25	–	–
2017–18	4.82	115.04	15.04	36.99	114.10	14.10	33.62	117.40	17.40	75.43	115.60	15.60
2018–19	28.91	680.00	580.0	100.91	311.26	211.26	36.01	125.73	25.73	165.83	254.20	154.20
2019–20	40.96	977.60	877.60	124.53	383.30	283.30	55.71	194.52	94.52	221.20	339.00	239.00
2020–21	42.33	1010.30	910.30	128.41	396.10	296.10	55.81	201.85	101.85	228.55	350.27	250.27

4. सब्जी सूचकांक – चयनित सब्जियों के फसलाधीन क्षेत्रफल सूचकांक में बहुत तीव्र एवं मसालों तथा फलों के फसलाधीन क्षेत्रफल सूचकांकों की तुलना में सर्वाधिक वृद्धि परिलक्षित हुई। वर्ष 2010–11 में सब्जियों का क्षेत्राच्छादन सूचकांक 114.21 रहा। वर्ष 2020–21 में यह सूचकांक बढ़कर 203.08 हो गया। वर्ष 2012–13 में यह बढ़कर 243.05 हो गया तथा शोध अवधि के अन्तिम वर्ष 2020–21 में यह सूचकांक बढ़कर 250.30 हो गया। शोध अवधि में चयनित सब्जियों के क्षेत्राच्छादन में ढाई गुना से भी अधिक वृद्धि का सूचक है।

उत्पादन सूचकांकों में उल्लेखनीय वृद्धि की प्रवृति – विचाराधीन शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनित उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में बहुत तीव्र वृद्धि की प्रवृति रही। यह वृद्धि 'राष्ट्रीय उद्यानिकी मिशन' के प्रदेश में लक्ष्यों को न केवल प्राप्त करने का सूचक है, बल्कि मिशन के लक्ष्यों से भी आगे बढ़ने की प्रवृति का द्योतक है।[8]

1. **समग्र उद्यानिकी फसल उत्पादन सूचकांक : मिशन के लक्ष्यों से अधिक वृद्धि –** शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनित उद्यानिकी फसलों के समग्र उत्पादन में बहुत तीव्र वृद्धि की प्रवृति पाई गई। चयनित उद्यानिकी फसलों के उत्पादन सूचकांकों में निरन्तर एवं तीव्र वृद्धि होने के साथ साढ़े तीन गुना बढ़कर 350.27 हो गया। वर्ष 2010–11 में यह सूचकांक 115.60 रहा। वर्ष 2020–21 में यह सूचकांक 254.20 रहा। वर्ष 2012 13 में यह सूचकांक बढ़कर 339.00 हो गया और शोध अवधि के अन्तिम वर्ष में यह बढ़कर 350.27 हो गया। चयनित उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में यह आशातीत वृद्धि का परिचायक है।

2. **फलोत्पादन सूचकांक : दो गुनी वृद्धि**– शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनित फलों के उत्पादन सूचकांकों में निरन्तर वृद्धि के साथ दो गुनी वृद्धि परिलक्षित हुई। शोध अवधि के प्रारंभिक वर्ष की तुलना में फलोत्पादन सूचकांक में 17.40 प्रतिशत की वृद्धि के साथ वर्ष 2010–11 में यह 117.40 हो गया। वर्ष 2020–21 में यह सूचकांक 126.73 रहा। वर्ष 2012–13 में यह बढ़कर 19452 हो गया तथा अन्तिम वर्ष 2020–21 में यह सूचकांक बढ़कर 201.85 हो गया।

3. **सब्जी उत्पादन सूचकांक : चार गुना वृद्धि –** शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनित सब्जियों के उत्पादन में तीव्र वृद्धि की प्रवृति परिलक्षित हुई है। सब्जी उत्पादन सूचकांकों में निरन्तर तीव्र वृद्धि की प्रवृति, शोध क्षेत्र में सब्जियों के उत्पादन में 'राष्ट्रीय

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

उद्यानिकी मिशन' की सफलता का सूचक है। वर्ष 2010–11 में चयनित सब्जी उत्पादन सूचकांक 114.10 रहा। वर्ष 2020–21 में यह तेजी से बढ़कर 311.26 हो गया। वर्ष 2012–13 में यह

निरन्तर सूचकांक लगभग चार गुना वृद्धि की प्रवृति के साथ 383.30 हो गया तथा अन्तिम वर्ष 2020–21में यह सूचकांक 396.10 हो गया। यह शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनितसब्जियों के उत्पादन में बहुत बढ़ी वृद्धि का सूचक है।

4. **मसाला उत्पादन सूचकांक – दस गुना वृद्धि –** चयनित मसालों के उत्पादन में दस गुना वृद्धि के साथ बहुत बड़ी सफलता प्राप्त हुई। शोध अवधि में मसाला उत्पादन सूचकांक बहुत तेजी से बढ़े। वर्ष 2010–11 में मसाला उत्पादन सूचकांक 115.04 था, जो वर्ष 2020–21 में बढ़कर 680 हो गया। वर्ष 2012–13 में मसाला उत्पादन सूचकांक बढकर 977.60 हो गया और अन्तिम वर्ष 2020–21 में मसाला उत्पादन सूचकांक दस गुना बढ़कर 1010.30 हो गया। यह शोध अवधि में शोध क्षेत्र में उद्यानिकी फसल मसालों के विकास की बहुत बड़ी उपलब्धि है।[9]

समग्र उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में तीव्र वृद्धि

विचाराधीन शोध क्षेत्र में शोध अवधि में समग्र रूप से चयनित बागवानी फसलों के उत्पादन में तीव्र गति से वृद्धि की प्रवृति परिलक्षित हुई है। तीनों चयनित उद्यानिकी फसलों – मसाले, सब्जियों तथा फलों के उत्पादन में निरन्तर वृद्धि की प्रवृति रही है। शोध क्षेत्र में शोध अवधि के प्रारंभिक वर्ष 2019–20 में मसालों का उत्पादन 4.19 लाख मीट्रिक टन था, जो शोध अवधि के अन्तिम वर्ष में बढ़कर 42.33 लाख मीट्रिक टन हो गया। शोध–अवधि में मसालों के उत्पादन में यह 9 10 प्रतिशत की वृद्धि है, जो दस गुने से भी अधिक है। सब्जियों के उत्पादन में वृद्धि की दर अपेक्षाकृत कम रही। शोध अवधि के प्रारंभिक वर्ष 2019–20 में शोध क्षेत्र में चयनित सब्जियों का उत्पादन 32.42 लाख मीट्रिक टन था, जो अन्तिम वर्ष 2020–21 में बढ़कर 128.41 लाख मीट्रिक टन हो गया। यह शोध अवधि में चयनित सब्जियों के उत्पादन में 296,10 प्रतिशत की महत्वपूर्ण वृद्धि है। फलों के उत्पादन में वृद्धि की दर चयनित उद्यानिकी फसलों अपेक्षाकृत कम रही। शोध क्षेत्र में शोध अवधि के प्रारंभिक वर्ष 2019–20 में चयनित फलों का उत्पादन 28.64 लाख मीट्रिक टन था, जो शोध अवधि के अन्तिम वर्ष 2020–21 में बढ़कर 57.81 लाख मीट्रिक टन हो गया। इस प्रकार चयनित फलों के उत्पादन में यह 101.85 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि का सूचक है। प्रारंभिक वर्ष 2019–20 में समग्र चयनित बागवानी फसलों का उत्पादन 65.25 लाख मीट्रिक टन था, जो शोध अवधि के अन्तिम वर्ष 2020–21 में बढ़कर 228.55 लाख मीट्रिक टन हो गया। शोध क्षेत्र में शोध अवधि में चयनित उद्यानिकी फसलों के उत्पादन में यह 250.3 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि का सूचक है। जो 'राष्ट्रीय उद्यानिकी मिशन' को उद्यानिकी फसलों के उत्पादन को दो गुना करने के लक्ष्य से भी अधिक वृद्धि का परिचायक है। शोध क्षेत्र में शोध अवधि में चयनित बागवानी फसलों के उत्पादन सम्बन्धी विकास की प्रवृतियों का विश्लेषण करने के उपरान्त बड़ी सुगमतापूर्वक प्रतिपादित किया जा सकता है कि विचाराधीन शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनित बागवानी फसलों के उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई है। यह प्रवृति शोध क्षेत्र में उद्यानिकी फसलों के विकास का सूचक है।[10]

उद्यानिकी फसलों की मिश्रित वृद्धि दरें : तीव्र विकास की सूचक–

(अ) आच्छादित क्षेत्र दरें –

1 मसाला क्षेत्राच्छादन मिश्रित वृद्धि दर शोध अवधि में 52.75 प्रतिशत रही।

2 सब्जियों की क्षेत्राच्छादन मिश्रित वृद्धि दर 102.66 प्रतिशत रही।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

3 फलों की क्षेत्राच्छादन मिश्रिम वृद्धि दर 58.22 प्रतिशत रही।

4 चयनित समग्र उद्यानिकी फसलों की क्षेत्राच्छादन मिश्रिम वृद्धि दर 71.99 प्रतिशत रही।

(ब) उत्पादन दरें –

1 मसाला उत्पादन की मिश्रित वृद्धि दर 595.74 प्रतिशत रही।

2 सब्जियों के उत्पादन की मिश्रित वृद्धि दर 101.19 प्रतिशत रही।

3 फलों के उत्पादन की मिश्रित वृद्धि दर 59.88 प्रतिशत रही।

4 शोध अवधि में शोध क्षेत्र में चयनित उद्यानिकी फसलों की समग्र उत्पादन मिश्रित वृद्धि दर 16477 प्रतिशत रही।

चयनित उद्यानिकी फसलों की मिश्रित वृद्धि

स.क्र.	फसल	आच्छादित क्षेत्र मिश्रित वृद्धि दर	उत्पादन मिश्रित वृद्धि दर
1	मसाले	52.75	595.74
2	सब्जियाँ	102.66	201.19
3	फल	58.22	59.88
4	समस्त चयनित उद्यानिकी फसलें	71.99	164.77

निष्कर्ष

उक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है किमध्य प्रदेश में विगत 5 वर्षों में चयनित उद्यानिकी फसलों के विकास का विश्लेषण करने के उपरान्त निष्कर्ष के रूप में प्रकट होता है कि प्रदेश में उद्यानिकी फसलों का अत्यन्त तीव्र विकास हुआ है और यह विकास बहुआयामी है। शोध कार्य के कुछ मुख्य निष्कर्ष निम्न प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किये जा सकते हैं –

सुझाव

प्रदेश में शोध अवधि में चयनित उद्यानिकी फसलों के विकास का विश्लेषण करने के उपरान्त बहुत सी बातें स्पष्ट होती है, जिनमें सुधार करके और कुछ नवाचारों को अपना कर प्रदेश के उद्यानिकी क्षेत्र को और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है। 1. उद्यानिकी क्षेत्र के कृषकों को कृषि वित्त की व्यवस्था करके उनकी वित्त सम्बन्धी कठिनाईयों को दूर किया जा सकता है।2. उद्यानिकी फसलों के उन्नत पौध कार्यक्रम को और अधिक क्षेत्रों तथा अधिक फसलों पर विस्तार करके उत्पादन तथा उत्पादकता बढ़ाने के प्रयास किये जा सकते हैं।3. बागवानी फसलों के मानकीकरण, परिवहन, भण्डारण और विपणन की उचित एवं उपयुक्त प्रणाली की आवश्यकता है। मानकीकरण की सुविधा, परिवहन व्यवस्था में सुधार तथा भण्डारण क्षमता में विस्तार करके बागवानी क्षेत्र को ठीक प्रकार विकसित किया जा सकता है।4. बागवानी फसलों की कीमत स्थिरता सुनिश्चित करके तथा विपणन व्यवस्था में सुधार करके भी बागवानी क्षेत्र को संरक्षण देकर क्षेत्र का विकास सुनिश्चित किया जा सकता है। 5. बागवानी फसलों में और अनुसंधान के द्वारा उत्पादन तथा उत्पादकता दोनों में वृद्धि की संभावनायें हैं। 6. प्रदेश के उद्यानिकी क्षेत्र को जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से बचाने की भी आवश्यकता है। बागवानी फसलों को फसल बीमा योजना द्वारा भी संरक्षण प्रदान किया जा सकता है। उक्त उपायों के क्रियान्वयन से प्रदेश में उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल विस्तार के साथ–साथ उत्पादन तथा उत्पादकता दोनों

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 1, November 2025 Impact Factor: 7.67

में वृद्धि की संभावना है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आय बढ़ने की संभावना भी है। इससे ग्रामीण गरीबी दूर करने तथा ग्रामी! के जीवन स्तर में सुधार होने की संभावना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

[1]. मध्य प्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण 2020–21आर्थिक एवंसांख्यिकी संचालनालय,मध्य प्रदेश शासन। उद्यानिकी फसलों का क्षेत्राच्छादन विवरण
[2]. Uttar Pradesh Agricultural Economic Survey 2020 Directorate of Economics and Statistics, Govt- of U.P.
[3]. Ag- Censcus 2012, CSO New Delhi.
[4]. Chadha, K. L.(2001)'Minuts of the Fourth Meeting of the working Groupon horticultureDevelopment for Formulation of Tenth Five Year Plan', Krishi Bhawan, New Delhi.
[5]. Uttar Pradesh Agricultural Economic Survey 2014 (2014) Directorate of Economics and Statistics, Govt.of U.P.
[6]. Uttar Pradesh Human Development Report - 2007, UNDP, Oxford University Press, New Delhi.
[7]. Uttar Pradesh Development, Report (2011) Planning Commission of India,Academic Foundation, New Delhi.
[8]. Malhotra, S.K.(2012)'Technology Led Development in Horticulture ' For Increase Production and Production', Horticulture Commission, Govt. of India, New Delhi.
[9]. Narayanan, C.K.(2014)'Post Harvest Losses in Selected Fruits and vegetablesin India'(Edited)- Indian Institute of Horticultural Research, Bangaluru.
[10]. Twelfth-Five Year Plan -2012-17 and Annual Plan 2012 13, Volume & I, Planning, Economics and Statistics Department, Govt. of U.P.
[11]. Tiwari, R.K.(2014)'Horticulture Development By NHB' Directorate, National Horticulture Board, Govt. of India, New Delhi.